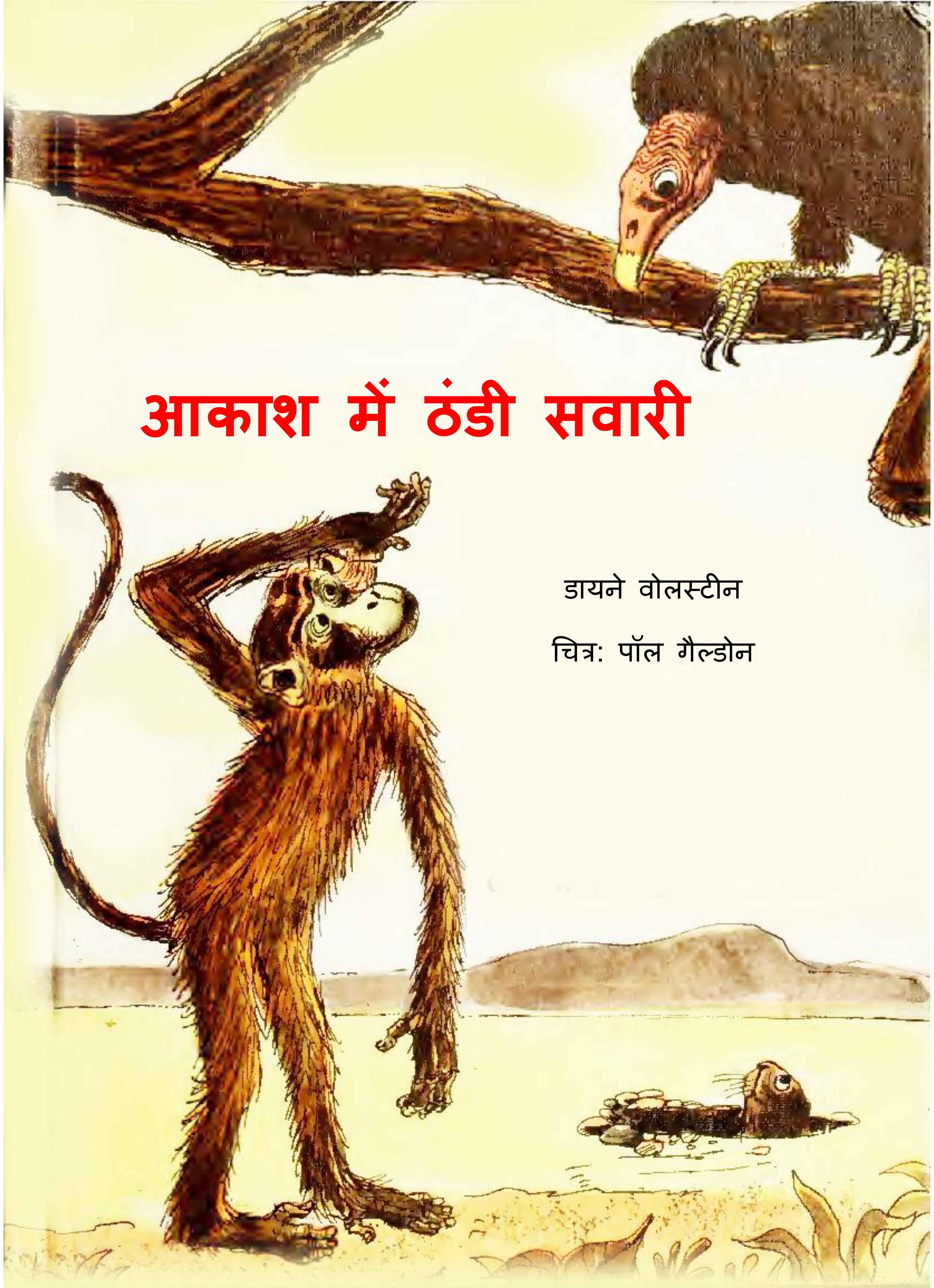
आकाश में ठंडी सवारी



डायने वोलस्टीन

चित्र: पॉल गैल्डोन



आकाश में ठंडी सवारी

डायने वोलस्टीन

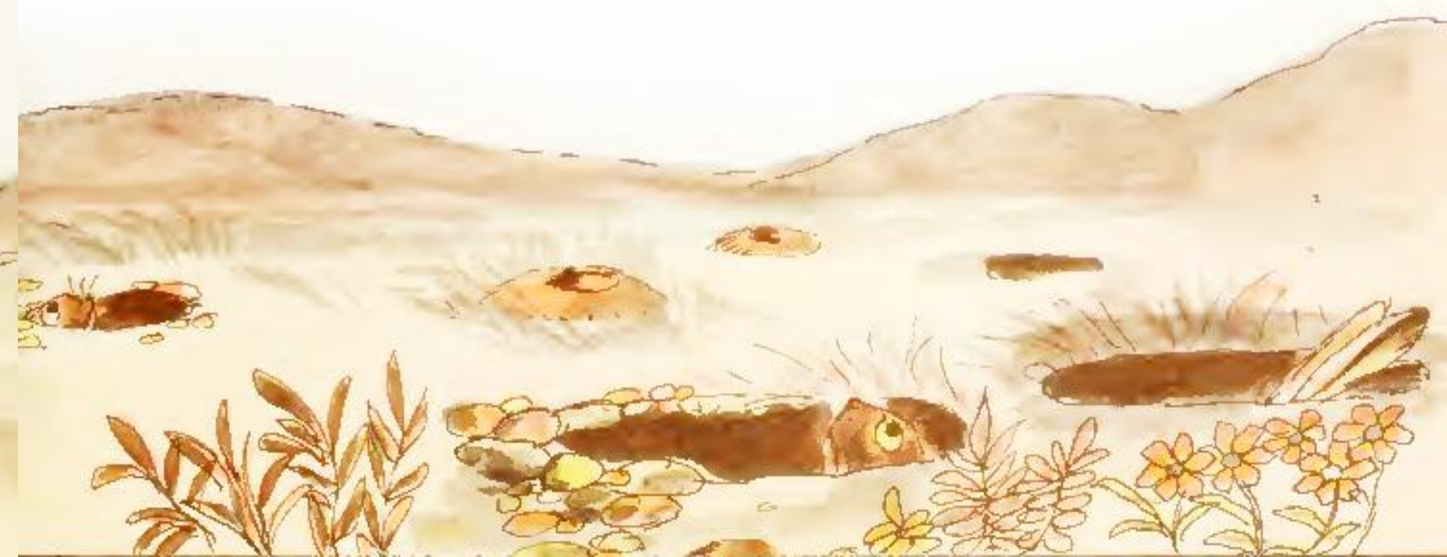
चित्र: पॉल गैल्डोन

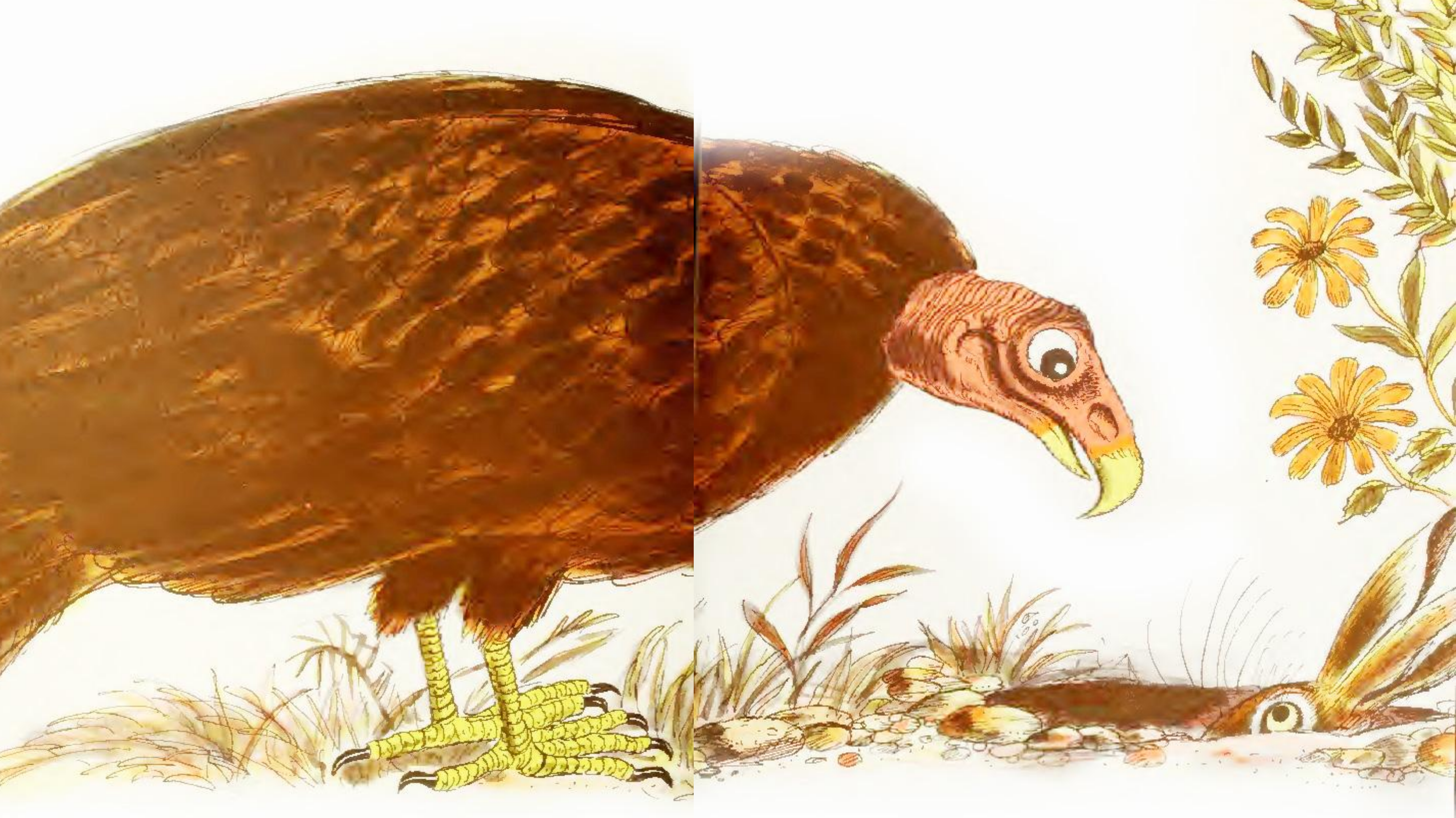




वो बहुत गर्म गर्मी का दिन था. सभी जानवर झाड़ियों के नीचे या अपने-अपने बिलों में धूप से छिपे हुए थे, लेकिन गिद्ध नहीं. वह भोजन की तलाश में आकाश में इधर-उधर उड़ रहा था. वह घंटों से इधर-उधर उड़ता रहा, जब अचानक—







एक खरगोश अपने बिल से बाहर कूदा. गिद्ध ने उसे तुरंत देखा और नीचे झपट्टा मारा, लेकिन खरगोश वापस अपने बिल में कूद गया.

गिद्ध खरगोश के बिल के पास उतरा.

"नमस्ते खरगोश," गिद्ध ने मधुरता से कहा. "तुम्हें नीचे अपने बिल में कैसा लग रहा है?"

"गर्मी!" खरगोश चिल्लाया. "मेरे घर में गर्मी है और जमीन भी तप रही है. बताओ, ऊपर आसमान में कैसा है?"

"ओह खरगोश," गिद्ध ने कहा. "वहां ऊपर जितना ठंडा हो सकता है, उतना ठंडा है. तुम मेरी पीठ पर क्यों नहीं चढ़ जाते फिर मैं तुम्हें ऊपर घुमाने ले जाऊँगा?" खरगोश ने अपने बिल से बाहर झाँका. सूरज बहुत तेज़ था.

"जल्दी करो खरगोश," गिद्ध ने कहा. "मेरे पास सभी को मुफ़्त सवारी देने के लिए बहुत समय नहीं है."

खरगोश ने गिद्ध की ओर देखा. गिद्ध इतना शांत और प्रसन्न दिख रहा था कि खरगोश ने वो जोखिम लेने का फैसला लिया.

"ठीक है," उसने कहा, और वो गिद्ध की पीठ पर कूद गया.



गिद्ध आसमान में उड़ गया. वह इधर-उधर उड़ता रहा, जब तक कि वह दोपहर के भोजन के लिए तैयार नहीं हो गया.

"खरगोश रुको," उसने कहा. "मैं उतरने जा रहा हूँ."

फिर गिद्ध ने अपनी शक्तिशाली छलांग लगाई, सौ फीट सीधे नीचे. धरती पर गिरने से ठीक पहले, उसने खरगोश को अपनी पीठ से फेंकते हुए फिर से छलांग लगाई. गिद्ध फिर हवा में घूमा, वापस जमीन पर आया और फिर उसने खरगोश को अपने दोपहर के भोजन के लिए खा लिया.





उस दोपहर देर से गिद्ध को फिर से भूख लगी. वह उसी जगह पर उड़ गया और आकाश में चक्कर लगाता रहा, इधर-उधर, जब तक कि—

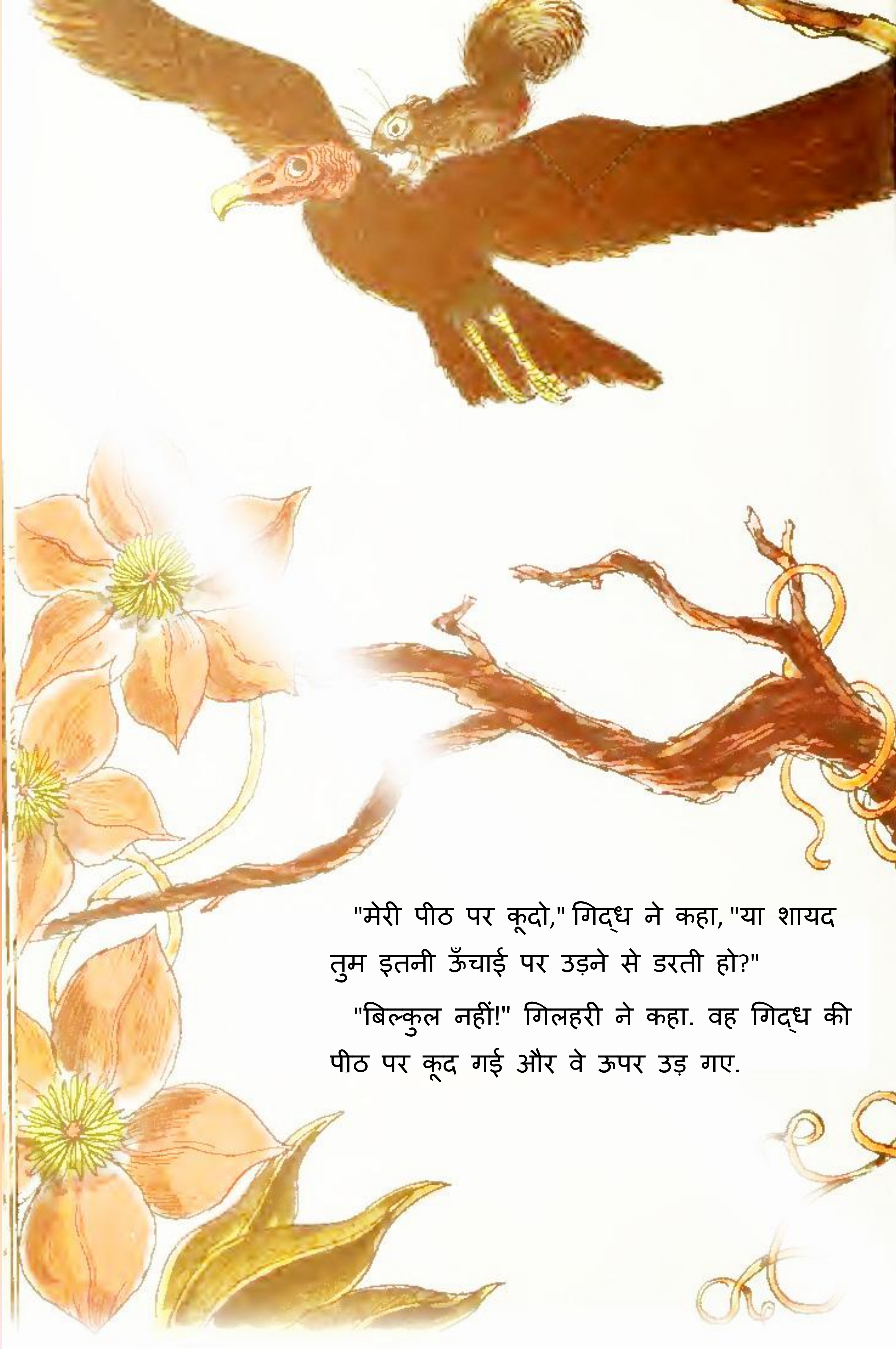


एक गिलहरी अपने घोंसले से नीचे उतरी. गिद्ध जल्दी से गिलहरी की ओर बढ़ा, लेकिन गिलहरी पेड़ के एक छेद में वापस भाग गई. गिद्ध एक शाखा पर उतरा, "हेलो गिलहरी!" गिद्ध ने कहा, "आज तुम्हें कैसा लग रहा है?"

"मुझे बहुत गर्मी लग रही है, गिद्ध. पूरे दिन भीषण गर्मी थी और मुझे अभी भी गर्मी लग रही है."

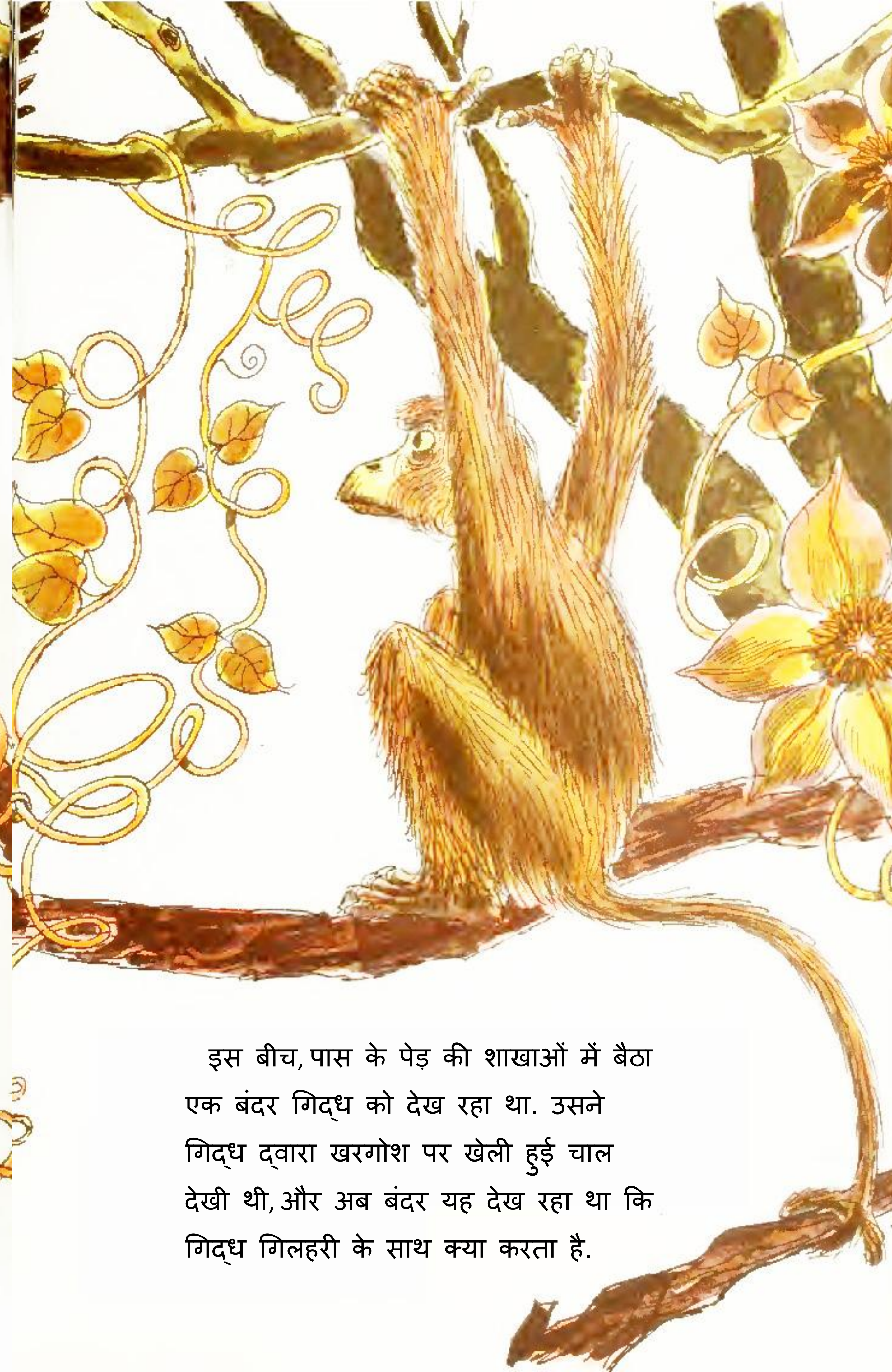
"देखो, आसमान ठंडा है, गिलहरी. मेरी पीठ पर कूदो और मैं तुम्हें वहाँ सैर के लिए ले जाऊँगा." वैसे गिलहरी को पता था कि गिद्ध एक चालाक जानवर है, लेकिन वह यह भी जानती थी कि पेड़ पर जितना ऊपर जाओगे, वहां उतनी ही अधिक ठंडक होगी. फिर भी—





"मेरी पीठ पर कूदो," गिद्ध ने कहा, "या शायद तुम इतनी ऊँचाई पर उड़ने से डरती हो?"

"बिल्कुल नहीं!" गिलहरी ने कहा. वह गिद्ध की पीठ पर कूद गई और वे ऊपर उड़ गए.



इस बीच, पास के पेड़ की शाखाओं में बैठा एक बंदर गिद्ध को देख रहा था. उसने गिद्ध द्वारा खरगोश पर खेली हुई चाल देखी थी, और अब बंदर यह देख रहा था कि गिद्ध गिलहरी के साथ क्या करता है.





गिद्ध इधर-उधर उड़ता रहा.

थोड़ी देर बाद गिद्ध गिलहरी की ओर मुड़ा और बोला: "रुको गिलहरी. मैं उतरने जा रहा हूँ."

फिर से, गिद्ध ने अपनी शक्तिशाली छलांग लगाई, सौ फीट सीधे नीचे, आखिरी मिनट में वो फिर से ऊपर की ओर उछला, जिससे बेचारी गिलहरी उसकी पीठ से नीचे गिर गई. फिर गिद्ध मुड़ा, वापस आया और वो गिलहरी को रात के खाने के लिए खा गया.



गिद्ध के उड़ जाने के बाद, बंदर अपनी शाखा पर झूलने लगा. आगे-पीछे, आगे-पीछे, जब तक कि उसे अपने दिमाग में एक अच्छा विचार नहीं सूझा.



अगले दिन फिर से गर्मी थी. सूरज चमक रहा था, और जानवर सूरज से छिप रहे थे. लेकिन बंदर साफ़-साफ़ आसमान को निहारते हुए खड़ा था.

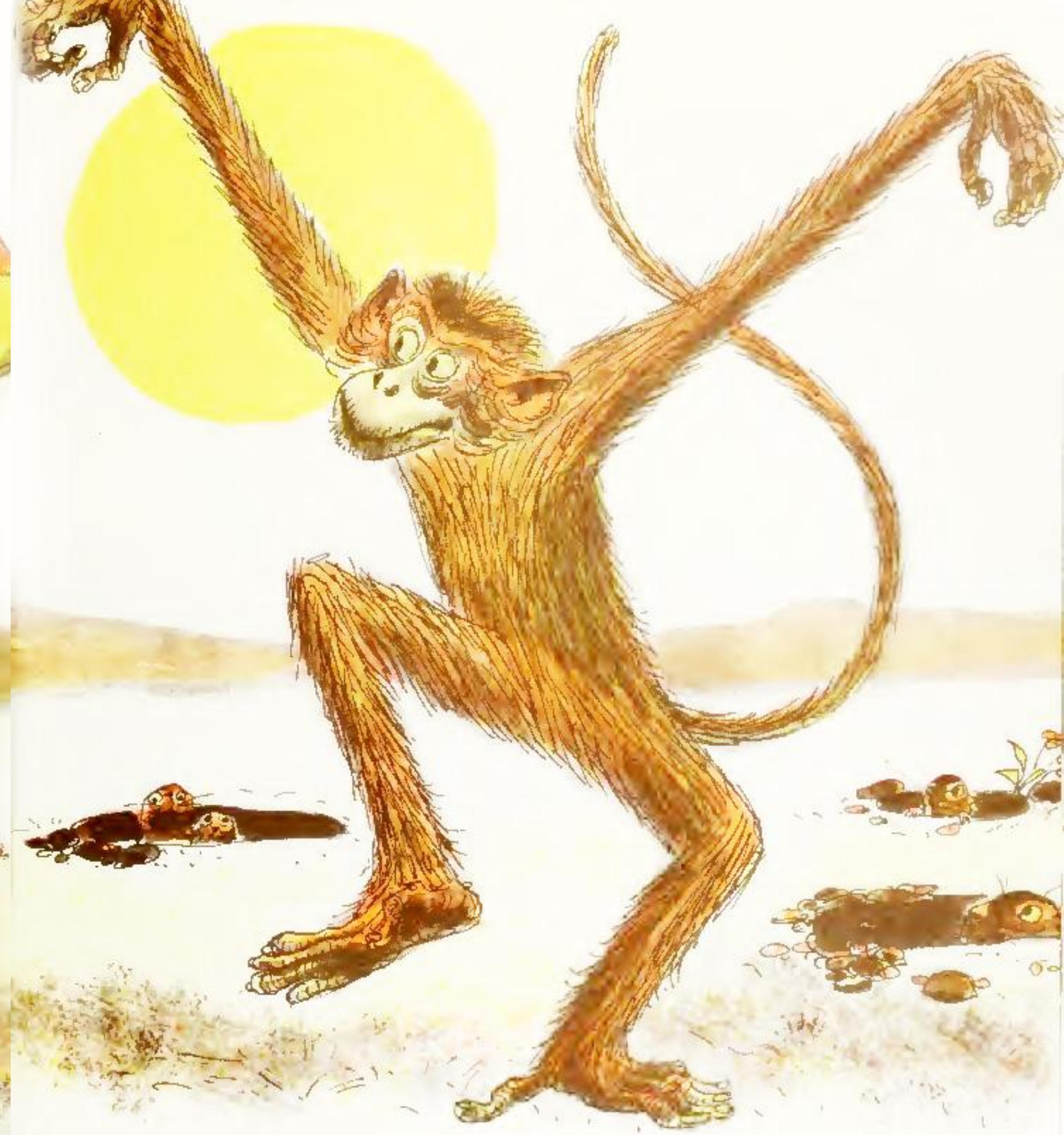


जब दूसरे जानवरों ने देखा कि बंदर घंटों धूप में खड़ा है, तो वे और भी उत्सुक हुए और उन्होंने अपने छिपने के स्थानों से अपना सिर बाहर निकाला.



दोपहर के करीब, बंदर ने गिद्ध को देखा. वह हवा में अपनी बाहें फड़फड़ाते हुए ऊपर-नीचे नाचने लगा. एक मिनट से भी कम समय बाद गिद्ध बंदर की बगल में जमीन पर उतरा.

"नमस्ते बंदर," उसने कहा, "तुम किस तरह का नाच कर रहे थे?"

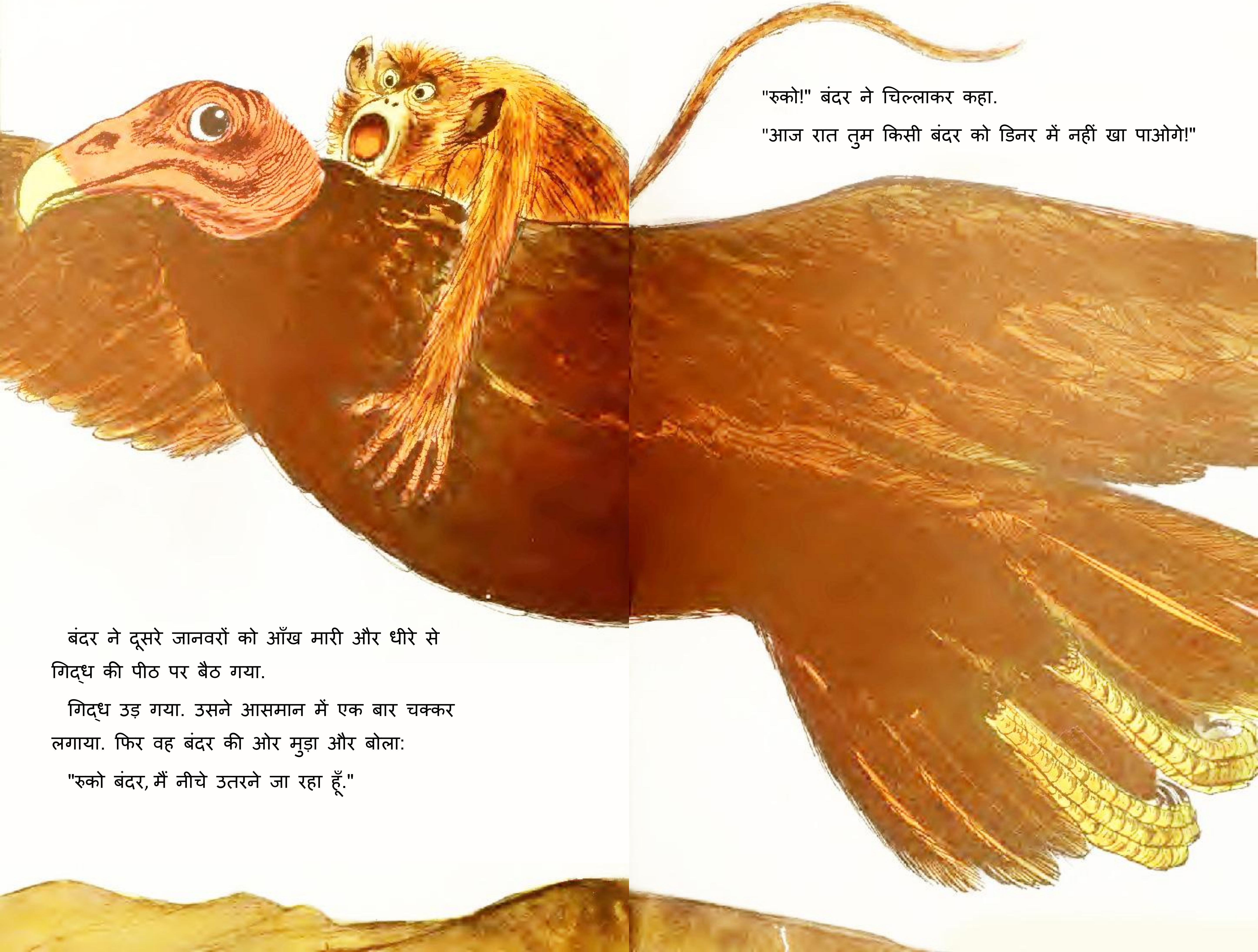


"एक उड़ने वाला नृत्य. क्या तुम्हें वो पसंद आया?"

"अच्छा... हाँ-"

"हाँ," बंदर ने कहा. "मैं उड़ने वाला नाच कर रहा था. मैं चाह रहा था कि मैं आसमान में एक शानदार सवारी कर सकूँ."

"ओह-ह बंदर!" गिद्ध के चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान आ गई. "आसमान में मुफ़्त सवारी देने से ज़्यादा मुझे कुछ और पसंद नहीं है. जल्दी करो, मेरी पीठ पर कूदो और हम ऊपर चढ़ेंगे."



"रुको!" बंदर ने चिल्लाकर कहा.

"आज रात तुम किसी बंदर को डिनर में नहीं खा पाओगे!"

बंदर ने दूसरे जानवरों को आँख मारी और धीरे से गिद्ध की पीठ पर बैठ गया.

गिद्ध उड़ गया. उसने आसमान में एक बार चक्कर लगाया. फिर वह बंदर की ओर मुड़ा और बोला:

"रुको बंदर, मैं नीचे उतरने जा रहा हूँ."



फिर बंदर ने अपनी पूंछ को गिद्ध की गर्दन के चारों ओर इतनी कसकर लपेटा कि गिद्ध की आंखें लगभग उसके सिर से बाहर निकल आईं.

"गिद्ध!" बंदर ने कहा, "अब तुम होश में आओ और सही तरीके से उड़ो!"

गिद्ध फिर संभला और उसे सीधे उड़ना पड़ा.





बंदर ने गिद्ध को नीचे उड़ने का आदेश दिया, ताकि वह जमीन पर अपने दोस्तों को हाथ हिला सके. उन्होंने खुशी मनाई और हाथ हिलाया.

"अब गिद्ध," बंदर ने कहा, "हम नीचे उतरेंगे."

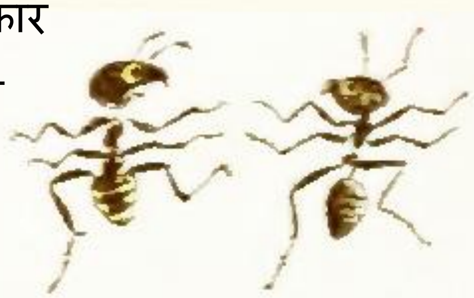






बंदर नीचे जाने के लिए तैयार था. बंदर ने गिद्ध की गर्दन पर अपनी पकड़ कुछ थोड़ी ढीली की, और गिद्ध नीचे उतरा लेकिन धीरे से उतरा.

सभी जानवर हंसते हुए और जयकार करते हुए बंदर के चारों ओर इकट्ठा हो गए, जबकि गिद्ध शर्म के मारे वहां से उड़ गया.





"हम उस गिद्ध को लंबे समय तक फिर से नहीं देख पाएंगे," बंदर ने कहा.



फिर उसने अपनी बाहें हवा में लहराईं और एक पैर से दूसरे पैर पर उछलना शुरू कर दिया. वह उड़ने वाला नृत्य कर रहा था. और जल्द ही सभी जानवर उसके साथ नाच में शामिल हो गए.





और गिद्ध ठंडी हवा में फिर से ऊपर उड़ गया और आकाश में इधर-उधर उड़ने लगा, जब तक कि—





0-394-92489-4